अथेश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनामन्त्राः

अब हम ईश्वर की स्तुति (गुणगान), प्रार्थना (माँगना) और उपासना (ईश्वर के सामीप्य की अनुभूति करना) के लिए निम्न मन्त्रों का जाप करें। इन तीनों में से ईश्वर से माँगना हमें कम से कम करना चाहिए परन्तु उपासना हर समय करनी चहिए।

ओम् विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव ।
यद् भ॒द्रं तन्न॒ऽआ सु॑व ॥१॥ यजुः ३०:३

विश्वा॑नि । दे॒व । स॒वि॒तः॒ । दुरि॒तानीति दुः॒ऽइ॒तानि॑ । परा॑ । सु॒व । यत् । भ॒द्रम् । तत् । नः॒ । आ । सु॒व ॥

हे (*दे॒व*) **दिव्य गुणों वाले** (*स॒वि॒तः॒*) **सृष्टि के उत्त्पत्तिकर्त्ता!** (*विश्वा॑नि*) **समस्त विश्व की** (*दुः*) **बुराईयों** (*इ॒तानि॑*) **आदि को** (*परा॑*) **दूर** (*सु॒व*) **कीजिये और** (*यत्*) **जो** (*भ॒द्रम्*) **कल्याणकारी गुण, स्वभाव व सुख हैं** (*तत्*) **वह** (*नः॒*) **हमारे** (*आ*) **पास** (*सु॒व*) **लाईये।**

हे सर्वेश! सकल सुखदाता, तू शुद्ध स्वरूप विधाता है। उसके कष्ट नष्ट हो जाते, जो तेरे ढिङ्ग आता है॥
विषयवासना के विकार से, हमको नाथ! बचा लीजे। जग के पावन पुण्यपदार्थ, प्रेम सिन्धो! हमको दीजे॥

ओं हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भः सम॑वर्त्त॒ताग्रे॑ भू॒तस्य॑ जा॒तः पति॒रेक॑ आसीत् ।
स दा॑धार पृथि॒वीं द्यामु॒तेमां कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम ॥२॥

ऋग् १०:१२१:१, यजुः १३:४, यजुः २३:१, यजुः २५:१०

हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भः । इति॑ । हिरण्यऽग॒र्भः । सम् । अ॒व॒र्त्त॒त । अग्रे॑ । भू॒तस्य॑ । जा॒तः । पतिः॑ । एकः॑ । आ॒सी॒त् ।
सः । दा॒धा॒र॒ । पृ॒थि॒वीम् । द्याम् । उ॒त । इ॒माम् । कस्मै॑ । दे॒वाय॑ । ह॒विषा॑ । वि॒धे॒म॒ ॥

यह (*जा॒तः*) **प्रसिद्ध है कि वह** (*हिरण्य*) **स्वर्णिम प्रकाश का** (*ग॒र्भः*) **स्रोत,** (*अग्रे॑*) **सबसे पहले सभी जगह** (*सम्*) **समान रूप से** (*अ॒व॒र्त्त॒त*) **मौजूद, ईश्वर ही समस्त** (*भू॒तस्य॑*) **प्राणियों का** (*एकः॑*) **एकमात्र** (*पतिः॑*) **स्वामी** (*आ॒सी॒त्*) **है।** (*सः*) **वह ही** (*पृ॒थि॒वीम्*) **पृथ्वी,** (*द्याम्*) **सूर्य, चन्द्र** (*उ॒त इ॒माम्*) **आदि ग्रहों को** (*दा॒धा॒र॒*) **धारण किए हुए है।** (*कस्मै॑*) **उसी** (*दे॒वाय॑*) **ईश्वर को हम** (*वि॒धे॒म॒*) **विधिपूर्वक अपनी** (*ह॒विषा॑*) **प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करते हैं।**

तू ही स्वयं प्रकाश सुचेतन सुख स्वरूप शुभ त्राता है। सूर्य-चन्द्र लोकादिक को तू रचता और टिकाता है॥
पहले था अब भी तू ही है घट घट में व्यापक स्वामी। योग भक्ति तप द्वारा तुझ को पाऊँ हे अन्तर्यामी॥

ATHESHVARA STUTI PRAARTHAN-OPAASANAA MANTRAAḤ

We now begin (stuti) glorification of, (prarthanaa) praying to fulfill our legitimate needs, and (upaasanaa) communion with God. Out of these three activities, we should perform the act of prarthanaa i.e. asking for favors the least. The act of upasanaa i.e. being next to and in communion with God should be done all the time, as this reduces our tendency to commit sin.

1. Om vishvaani deva savitar-duritaani paraa suva yad bhadran tanna'aa suva

Yajuḥ 30:3

O (*deva*) **divine** (*savitar*) **source of all creation! Please** (*suva*) **take** (*itaani*) **everything in this** (*vishvaani*) **Universe that is** (*dur*) **malevolent** (*paraa*) **away and** (*suva*) **bring** (*aa*) **close to** (*na*) **us** (*yad*) **whatever** (*tan*) **that is** (*bhadran*) **benevolent including qualities, tendencies and happiness.**

he sarvesh! sakal sukhadaataa too shuddh svaroop vidhaataa hai
usake kaṣ h ṭ naṣ h ṭ ho jaate jo tere ḍhiṅg aataa hai
viṣhaya-vaasanaa ke vikaara se hamako naath bachaa leeje
jag ke paavana puṇya-padaarth prem sindho hamako deeje

2. Om hiraṇya-garbhaḥ sam-avarttata-agre bhootasya jaataḥ patir-eka aaseet sa daadhaara pṛithiveen dyaam-ut-emaaṅ kasmai devaaya haviṣhaa vidhema

Ṛig 10:121:1, Yajuḥ 13:4, Yajuḥ 23:1,Yajuḥ 25:10

It is (*jaataḥ*) **well known that he is the** (*garbhaḥ*) **source of all** (*hiraṇya*) **golden light,** (*sam*) **equally** (*avarttata*) **present everywhere,** (*agre*) **foremost and** (*aaseet*) **is the** (*eka*) **sole** (*patir*) **lord of** (*bhootasya*) **all living beings and non-living as well.** (*sa*) **He** (*daadhaara*) **sustains the** (*pṛithiveem*) **earth** (*ut*) **and** (*emaam*) **all other** (*dyaam*) **celestial bodies in their orbits. We offer our** (*haviṣhaa*) **worship** (*vidhema*) **with love and devotion unto** (*kasmai*) **that** (*devaaya*) **divinity.**

too hee svayam prakaash suchetan sukh svaroop shubh traataa hai
soorya-chandr lokaadik ko too rachataa aur ṭikaataa hai
pahale thaa ab bhee too hee hai ghaṭ ghaṭ men vyaapak svaamee
yog bhakti tap dvaaraa tujh ko paaoon he antaryaamee

ओं यऽ आत्मदा बलदा यस्य विश्वऽ उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्य च्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥

ऋग् १०:१२१:२, यजुः २५:१३

यः । आत्मदा इति आत्मऽदाः । बलदा इति बलऽदाः । यस्य । विश्वे । उपासत इति उपऽआसते । प्रशिषम् इति प्रऽशिषम् । यस्य । देवाः । यस्य । छाया । अमृतम् । यस्य । मृत्युः । कस्मै । देवाय । हविषा । विधेम ॥

(*यः*) **जो** (*आत्म*) **आत्मज्ञान का** (*दाः*) **दाता है, जो शारीरिक** (*बल*) **बल का** (*दाः*) **दाता है,** (*यस्य*) **जिसकी समस्त** (*विश्वे*) **विश्व** (*उपऽआसते*) **उपासना करता है,** (*देवाः*) **विद्वान** (*यस्य*) **जिसके** (*प्रऽशिषम्*) **विधान को मानकर उसका गुणगान करते हैं,** (*यस्य*) **जिसकी** (*छाया*) **शरण** (*अमृतम्*) **अमृत के समान है और** (*यस्य*) **जिसका न मानना ही** (*मृत्युः*) **मृत्यु के समान है** (*कस्मै*) **उसी** (*देवाय*) **ईश्वर को हम** (*विधेम*) **विधिपूर्वक अपनी** (*हविषा*) **प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करते हैं ।**

तू है आत्मज्ञान बलदाता सुयश विज्ञजन गाते हैं। तेरी चरण शरण में आकर भवसागर तर जाते हैं ॥
तुझको ही अपना जीवन है मरण तुझे बिसराने में। मेरी सारी शक्ति लगे प्रभो! तुझसे लगन लगाने में ॥

ओं यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽ इद्राजा जगतो बभूव ।
यऽ ईशेऽ अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥

ऋग् १०:१२१:३, यजुः २३:३, यजुः २५:११

यः । प्राणतः । निमिषत इति निऽमिषतः । महित्वेति महिऽत्वा । एकः । इत् । राजा । जगतः । बभूव । यः । ईशे । अस्य । द्विपद इति द्विऽपदः । चतुष्पदः चतुःपद इति चतुःऽपदः । कस्मै । देवाय । हविषा । विधेम ॥

(*यः*) **जो** (*त्वा*) **अपनी** (*महि*) **महिमा के कारण** (*जगतः*) **जगत में** (*प्राणतः*) **प्राणियों व** (*निऽमिषतः*) **अप्राणियों का** (*एकः इत्*) **एकमात्र** (*राजा*) **राजा** (*बभूव*) **है,** (*यः*) **जो** (*अस्य*) **यहाँ** (*द्वि*) **दो** (*पदः*) **पैर वाले और** (*चतुः*) **चार** (*पदः*) **पैर वालो का** (*ईशे*) **स्वामी है,** (*कस्मै*) **उसी** (*देवाय*) **ईश्वर को हम** (*विधेम*) **विधिपूर्वक अपनी** (*हविषा*) **प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करते हैं ।**

तू ने अपनी अनुपम माया से जगत ज्योति जगाई है। मनुज और् पशुओं को रचकर निज प्रभुता प्रगटाई है ॥
अपने हिय सिंहासन पर श्रद्धा से तुझे बिठाते हैं। लेकर सर्व सामग्री विधिवत् तुझ पर नाथ चढाते हैं ॥

3. Om ya'aatma-daa bala-daa yasya vishva'upaasate
prashiṣhañ yasya devaaḥ
yasya-ch-chhaayaa' mṛitañ yasya mṛityuḥ
kasmai devaaya haviṣhaa vidhema **Ṛig 10:121:2, Yajuḥ 25:13**

He, (*ya*) **who is the** (*daa*) **provider of the** (*aatma*) **spiritual knowledge and the physical** (*bala*) **strength,** (*yasya*) **who is** (*upaasate*) **worshipped by the** (*vishva*) **entire Universe, the** (*devaaḥ*) **learned scholars** (*prashiṣhañ*) **obey** (*yasya*) **whose commandments and sing whose praises,** (*yasya*) **whose** (*chhaayaa*) **refuge** (*amṛitañ*) **takes away the fear of death and acting contrary to** (*yasya*) **whose commandments** (*mṛityuḥ*) **brings us closer to death, unto** (*kasmai*) **that** (*devaaya*) **divinity we offer our** (*haviṣhaa*) **worship** (*vidhema*) **with love and devotion.**

too hai aatmajñaan baladaataa suyash vijñajan gaate hain
teree charaṇ sharaṇ men aakar bhavasaagar tar jaate hain
tujhako hee apanaa jeevan hai maraṇ tujhe bisaraane men
meree saaree shakti lage prabho! tujhase lagan lagaane men

4. Om yaḥ praaṇato nimiṣhato mahi-tva-ika'
id-raajaa jagato babhoova
ya' eeshe' asya dvi-padash-chatuṣh-padaḥ
kasmai devaaya haviṣhaa vidhema
Ṛig 10:121:3, Yajuḥ 23:3, Yajuḥ 25:11

He, (*yaḥ*) **who by virtue of** (*tva*) **his** (*mahi*) **glory** (*babhoova*) **is the** (*ika id*) **sole** (*raajaa*) **king of all** (*praaṇato*) **living and** (*nimiṣhato*) **non-living** (*jagato*) **worlds,** (*ya*) **who in** (*asya*) **this Universe is the** (*eeshe*) **lord of all** (*dvi padash*) **bipeds and** (*chatuṣh padaḥ*) **quadrupeds, unto** (*kasmai*) **that** (*devaaya*) **divinity we offer our** (*haviṣhaa*) **worship** (*vidhema*) **with love and devotion.**

too ne apanee anupam maayaa se jagat jyoti jagaaee hai
***manuj aur pashuon ko rachakara nij prabhutaa praga*ṭaaee hai**
apane hiy sinhaasana par shraddhaa se tujhe biṭhaate hain
lekara sarv saamagree vidhivat tujh par naath chaḍhaate hain

ओं येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः ।
योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥५॥

ऋग् १०:१२१:५, यजुः ३२:६

येन । द्यौः । उग्राः । पृथिवी । च । दृढा । येन । स्वरिति । स्वः । स्तभितम् । येन । नाकः ।
यः । अन्तरिक्षे । रजसः । विमान । इति । विऽमानः । कस्मै । देवाय । हविषा । विधेम ॥
(*येन*) **जो** (*उग्राः*) **ज्वलंत प्रकाशमान** (*द्यौः*) **ग्रहों** (*च*) **और** (*पृथिवी*) **पृथ्वी को अपने पथ पर** (*दृढा*) **दृढ रखता है,** (*येन*) **जो** (*स्वः*) **सुखस्वरूप** (*नाकः*) **निर्वाण का** (*स्तभितम्*) **कारक है,** (*यः*) **जो** (*अन्तरिक्षे*) **अन्तरिक्ष में सभी** (*रजसः*) **ग्रह आदि को** (*विऽमानः*) **चलाता है,** (*कस्मै*) **उसी** (*देवाय*) **ईश्वर को हम** (*विधेम*) **विधिपूर्वक अपनी** (*हविषा*) **प्रार्थना और आहुतियाँ आदि अर्पित करते हैं ।**

तारे रवि चन्द्रादिक रचकर निज प्रकाश चमकाया है । धरणी को धारण कर तूने कौशल अलख जगाया है ॥
तू ही विश्व विधाता पोषक तेरा ही सब ध्यान धरें । भक्ति भाव से भगवन्! तेरे भजनामृत का पान करें ॥

ओं प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥ ऋग् १०:१२१:१०

प्रजाऽपते । न । त्वत् । एतानि । अन्यः । विश्वा । जातानि । परि । ता । बभूव ।
यत्ऽकामाः । ते । जुहुमः । तत् । नः । अस्तु । वयम् । स्याम । पतयः । रयीणाम् ॥
हे जगत की (*प्रजा*) **प्रजा के** (*पते*) **स्वामी!** (*त्वत्*) **आपके** (*अन्यः*) **अतिरिक्त** (*एतानि*) **और कोई** (*न*) **नहीं जो** (*विश्वा*) **समस्त विश्व में** (*जातानि*) **उत्पन्न हुए जड चेतन** (*ता*) **आदि का** (*परि*) **सब ओर से** (*बभूव*) **पालन करे ।** (*यत्*) **जिस जिस** (*कामाः*) **इच्छा को लेकर** (*नः*) **हम** (*ते*) **आपकी** (*जुहुमः*) **उपासना करते हैं** (*तत्*) **वह इच्छा पूर्ण** (*अस्तु*) **हो जिससे** (*वयम्*) **हम** (*रयीणाम्*) **उत्तम धनों के** (*पतयः*) **स्वामी** (*स्याम*) **हो जाएँ ।**

तुझ से भिन्न न कोई जग में सब में तू ही समाया है । जड चेतन सब तेरी रचना तुझ में आश्रय पाया है ॥
हे सर्वोपरि विभो! विश्व का तू ने साज सजाया है । हेतु रहित अनुराग दीजिए यही भक्त को भाया है ॥

5. Om yena dyaur-ugraa pṛithivee cha dṛiḍhaa
yena svaḥ stabhitañ yena naakaḥ
yo' antarikṣhe rajaso vimaanaḥ
kasmai devaaya haviṣhaa vidhema **Ṛig 10:121:5, Yajuḥ 32:6**

He, (*yena*) **who** (*dṛiḍhaa*) **steadies the** (*pṛithivee*) **earth** (*cha*) **and the** (*ugraa*) **luminous** (*dyaur*) **stars in their orbit,** (*yena*) **who is the** (*stabhitañ*) **cause of** (*svaḥ*) **happiness and** (*naakaḥ*) **bliss,** (*yo*) **who is the force behind the** (*vimaanaḥ*) **flight (motion) of** (*rajaso*) **the celestial bodies** (*antarikṣhe*) **in the space, unto** (*kasmai*) **that** (*devaaya*) **divinity we offer our** (*haviṣhaa*) **worship** (*vidhema*) **with love and devotion.**

taare ravi chandraadik rachakar nij prakaash chamakaayaa hai
dharaṇee ko dhaaraṇ kar too ne kaushal alakh jagaayaa hai
too hee vishv vidhaataa poṣhak teraa hee sab dhyaan dharen
bhakti bhaav se bhagavan! tere bhajana-amṛit kaa paan karen

6. Om prajaa-pate! na tvad-etaany-anyo
vishvaa jaataani pari taa babhoova
yat-kaamaas-te juhumas-tan-no'astu
vayan syaama patayo rayeeṇaam **Ṛig 10:121:10**

O (*pate*) **Lord of the** (*prajaa*) **masses! There is** (*na*) **no** (*etaany*) **one** (*anyo*) **except** (*tvad*) **you who can** (*babhoova*) **ensure the sustenance from** (*pari*) **all direction** (*taa*) **of the** (*vishvaa*) **entire** (*jaataani*) **creation including the living and non-living.** (*no*) **Our** (*kaamaas*) **benevolent desires, for** (*yat*) **which we have submitted our** (*juhumas*) **prayers to** (*te*) **you, may** (*tan*) **they** (*astu*) **be fulfilled, so that** (*vayan*) **we** (*syaama*) **can** (*patayo*) **command the** (*rayeeṇaam*) **righteous wealth.**

tujh se bhinn na koii jag men sab men too hee samaayaa hai
jaḍ chetan sab teree rachanaa tujh men aashray paayaa hai
he sarvopari vibho! vishv kaa toone saaj sajaayaa hai
hetu rahit anuraag deejie yahee bhakt ko bhaayaa hai

ओं स॑ नो॒ बन्धु॑र्जनि॒ता स वि॑धा॒ता धामा॑नि वेद॒ भुव॑नानि॒ विश्वा॑ ।
यत्र॑ दे॒वाऽ अ॒मृत॑मानशा॒नास्तृ॒तीये॒ धाम॑न्न॒ध्यैर॑यन्त ॥७॥ यजुः ३२:१०

सः । नः॒ । बन्धुः॑ । ज॒नि॒ता । सः । वि॒धा॒तेति॑ विऽधा॒ता । धामा॑नि । वे॒द॒ । भुव॑नानि । विश्वा॑ ।
यत्र॑ । दे॒वाः । अ॒मृ॑तम् । आ॒न॒शा॒नाः । तृ॒तीये॑ । धाम॑न् । अ॒ध्यैर॑य॒न्तेति॑ अधि॒ऽऐर॑यन्त ॥

(*सः*) **वह ईश्वर ही** (*नः*) **हमारा** (*बन्धुः*) **भ्राता व** (*जनिता*) **माता पिता है,** (*सः*) **वह ही** (*विश्वा*) **समस्त** (*भुवनानि*) **लोक लोकान्तरों के** (*धामानि*) **सभी स्थानों को** (*वेद*) **जानने वाला और सृष्टि को** (*विऽधाता*) **विधिपूर्वक चलाने वाला है ।** (*यत्र*) **उस,** (*तृतीये*) **जड और चेतन के सुख दुःख से परे,** (*अमृतम्*) **मोक्ष के** (*धामन्*) **आधार, के आश्रय में सुख** (*आनशानाः*) **प्राप्त कर** (*देवाः*) **विद्वान स्वेच्छा व** (*अधि*) **अधिकार से** (*ऐरयन्त*) **विचरण करते हैं ।**

तू गुरु है प्रजेश भी तू है पाप पुण्य फल दाता है । तू ही सखा बन्धु मम तू ही तुझसे ही सब नाता है॥
भक्तों को उस भव बन्धन से तू ही मुक्त कराता है । तू है अज अद्वैत महाप्रभु सर्वकाल का ज्ञाता है॥

ओम् अग्ने॒ नय॑ सु॒पथा॑ रा॒येऽ अ॒स्मान् विश्वा॑नि देव व॒युना॑नि वि॒द्वान् ।
यु॒यो॒ध्यस्मज्जु॑हुरा॒णमेनो॒ भूयि॑ष्ठान्ते॒ नम॑ऽउक्तिं विधेम ॥८॥ यजुः ४०:१६

अग्ने॒ । नय॑ । सु॒पथेति॑ । सु॒ऽपथा॑ । रा॒ये । अ॒स्मान् । विश्वा॑नि । देव॒ । व॒युना॑नि । वि॒द्वान् ।
यु॒यो॒धि । अ॒स्मत् । जु॒हु॒रा॒णम् । एनः॑ । भूयि॑ष्ठाम् । ते॒ । नम॑ऽउक्ति॒मिति॒ नमः॑ऽउक्तिम् । वि॒धे॒म॒ ॥

हे (*देव*) **दिव्य** (*अग्ने*) **प्रकाशस्वरूप जगदीश्वर! हम** (*विधेम*) **विधिपूर्वक** (*उक्तिम्*) **प्रशंसाओं द्वारा** (*ते*) **आपको** (*भूयिष्ठाम्*) **बार-बार** (*नमः*) **नमन करते हैं।** (*विद्वान्*) **सब कुछ जानने वाले प्रभु** (*अस्मत्*) **हम लोगों से** (*जुहुराणम्*) **कुटिलतारूप** (*एनः*) **पापाचरण को** (*युयोधि*) **पृथक् कीजिए।** (*अस्मान्*) **हमें** (*सुऽपथा*) **धर्मानुकूल मार्ग से** (*विश्वानि*) **समस्त** (*वयुनानि*) **ज्ञान और** (*राये*) **धन** (*नय*) **प्राप्त कराइये।**

तू है ज्ञान रूप परमेश्वर सब का सृजनहार तुही । मेरी रसना रटे तुम्हीं को मन में बसना सदा तुही ॥
अघ अनर्थ से हमें बचाते रहना हरदम दयानिधान । भक्त भवानी को हे भगवन् दीजे यही विशद वरदान ॥

॥ इतीश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनाप्रकरणम् ॥

7. Om sa no bandhur-janitaa sa vidhaataa
dhaamaani veda bhuvanaani vishvaa
yatra devaa' amṛitam-aanashaanaas
tṛiteeye dhaamann-adhy-airayanta **Yajuḥ 32:10**

(*sa*) **He is** (*no*) **our** (*janitaa*) **mother, father,** (*bandhur*) **brother, sister and friend.** (*sa*) **He alone** (*veda*) **knows** (*dhaamaani*) **all of the regions and places in this** (*vishvaa*) **entire** (*bhuvanaani*) **universe. He is the** (*vidhaataa*) **creator of the laws that govern the functioning of this cosmos. He is** (*tṛiteeye*) **aloof from the happiness and sorrows experienced by living and non-living.** (*yatra*) **He is the** (*amṛitam*) **indestructible** (*devaa*) **divinity under whose** (*dhaamann*) **refuge the learned** (*adhy*) **freely** (*airayanta*) **meditate and** (*aanashaanaas*) **attain bliss.**

8. Om agne naya supathaa raaye'asmaan
vishvaani deva vayunaani vidvaan
yuyodhy-asmaj-juhuraaṇam-eno
bhooyiṣhṭhaan te nama'uktim vidhema **Yajuḥ 40:16**

O (*deva*) **Divine** (*agne*) **source of all illumination! We** (*bhooyiṣhṭhaan*) **repeatedly** (*vidhema*) **with devotion** (*uktim*) **sing** (*te*) **your praises and** (*nama*) **bow to you. O** (*vidvaan*) **Omniscient God! Please** (*yuyodhy*) **take away** (*asmaj*) **from us the** (*juhuraaṇam*) **tendencies** (*eno*) **to transgress your laws. Guide us on** (*supathaa*) **the righteous path so that** (*asmaan*) **we can** (*naya*) **attain** (*vishvaani*) **all of** (*vayunaani*) **the knowledge and** (*raaye*) **wealth.**

too hai jñaan roop parameshvar sab kaa sṛijanahaar tuhee
meree rasanaa raṭe tumheen ko man men basanaa sadaa tuhee
agh anarth se hamen bachaate rahanaa haradam dayaanidhaan
bhakt bhavaanee ko he bhagavan deeje yahee vishad varadaan

Iteeshvara Stuti Praarthano-paasanaa Prakaraṇam
Here Comes To An End *The* ***Eeshvara Stuti Praarthanaa Upaasanaa*** *Chant*